वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :5 अंक : 232 | शुक्रवार 19 दिसम्बर 2025 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

चित्रकूट कॉलोनी के महावीर दिगम्बर जैन मंदिर में हुआ भव्य मंगल प्रवेश

दिशा बदल लो, जीवन की दशा अपने आप बदल जाएगी: विनिश्चय सागर महाराज

मुनि प्रत्यक्ष सागर मुनिराज का 12वां संयम मुनि दीक्षा दिवस मनाया गया। श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर महाराज ससंघ का शुक्रवार को एसएफएस आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में होगा भव्य मंगल प्रवेश

जयपुर. शाबाश इंडिया

समाधिस्थ गणाचार्य विराग सागर महाराज के परम प्रभावक शिष्य, वाक्केशरी श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर महाराज ससंघ का 13 वर्षों पश्चात जयपुर की पावन धरा पर मंगल प्रवेश हुआ। चित्रकूट कॉलोनी स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर में गुरुवार को आचार्य श्री ससंघ के दर्शनों के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। आचार्य श्री ससंघ का शुक्रवार, 19 दिसंबर को प्रातः तारों की कूट स्थित सूर्य नगर के श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के दर्शन करते हुए एसएफएस कॉलोनी स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में विशाल जुलूस के साथ भव्य मंगल प्रवेश होगा। इससे पूर्व आचार्य श्री ससंघ ने श्योपुर स्थित श्री चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर से मंगल विहार प्रारंभ किया। प्रतापनगर सेक्टर-3 स्थित दिगम्बर जैन मंदिर के दर्शन करते हुए पिंजरापोल गौशाला पहुंचे, जहां से गाजे-बाजे के साथ विशाल जुलूस द्वारा चित्रकूट कॉलोनी में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। मंदिर समिति द्वारा पाद प्रक्षालन एवं मंगल आरती कर आचार्य श्री ससंघ की भव्य अगवानी की गई। महिला मंडल की सदस्यों ने सिर पर कलश धारण कर स्वागत किया। जयपुर प्रवास समिति के महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा के अनुसार, चित्रकूट कॉलोनी के श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर में आयोजित धर्मसभा में आचार्य विनिश्चय सागर महाराज ने कहा कि मनुष्य में जीवन के प्रति अत्यधिक आसक्ति होने के कारण जीवन से मोह नहीं छूट पा रहा है। जीवन में छोड़ने की प्रवृत्ति ही मोक्ष मार्ग की ओर ले जाती है। भगवान महावीर ने भी त्याग करते-करते मोक्ष की ओर अग्रसर होकर तीर्थंकर पद प्राप्त किया। उन्होंने कहा, ''मरते समय तो सब कुछ छूटता ही है, लेकिन जो जीते-जी छोड़ देता है, वही श्रेष्ठ होता है। दिशा बदल लो, जीवन की दशा अपने आप बदल जाएगी।'' इस अवसर पर मुनि प्रत्यक्ष सागर मुनिराज ने अपने 12वें मुनि दीक्षा दिवस पर मंगल प्रवचन देते हुए कहा कि आचार्य विनिश्चय सागर महाराज 11 वर्ष पूर्व उनके जीवन में गुलिस्तां बनकर आए। उन्होंने एक साधारण पत्थर को तराशकर संयम मार्ग पर अग्रसर मुमुक्षु बना दिया। उन्होंने गुरु भक्ति को सर्वोच्च स्थान देने का आह्वान किया। मंगलाचरण के पश्चात मुनि भक्त भरत-प्रतिभा जैन ने पाद प्रक्षालन किया। पुष्पा, कुलदीप-श्रुति, अंकित-वैशाली सोनी परिवार (बाड़ा पदमपुरा) ने जिनवाणी भेंट कर पुण्यार्जन किया। त्रिवेणी नगर दिगम्बर जैन समाज एवं सूर्य नगर तारों की कूट जैन समाज ने श्रीफल भेंट कर अल्प प्रवास का निवेदन किया। धर्मसभा में राजस्थान जैन सभा जयपुर के उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा, चित्रकूट कॉलोनी अध्यक्ष अनिल जैन काशीपुरा, महामंत्री मूलचंद पाटनी, श्योपुर जैन समाज के पूर्व अध्यक्ष अशोक बाकलीवाल सहित अनेक गणमान्यजन एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। दोपहर में

आचार्य श्री ससंघ ने सांगानेर स्थित श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र संघीजी मंदिर के दर्शन किए तथा श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान का अवलोकन किया। इस अवसर पर संस्थान के छात्रों एवं संत सुधासागर महिला महाविद्यालय की छात्राओं को जैन धर्म की प्रभावना बढ़ाने का आशीर्वाद प्रदान किया गया। सायंकाल 6:15 बजे आचार्य श्री के सानिध्य में चित्रकूट कॉलोनी में जिज्ञासा समाधान कार्यक्रम आयोजित हुआ। रात्रि विश्राम चित्रकूट कॉलोनी में ही रहा। विनोद जैन कोटखावदा के अनुसार, श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर महाराज ससंघ का मंगल विहार जयपुर प्रवास के पश्चात दिल्ली एवं करनाल की ओर रहेगा।

शताब्दी समारोहः शीतकालीन प्रवास कार्यक्रम

परोपकार बाहर में नहीं, भावना में होता हैः आचार्य वर्धमान सागर महाराज

निवाई. शाबाश इंडिया

गुरुवार को सकल दिगम्बर जैन समाज निवाई के तत्वावधान में आयोजित प्रवचन माला में वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि पर के हित की भावना का उद्भव कहीं बाहर से नहीं अंतरंग से उत्पन्न होता है। आचार्य वर्धमान सागर महाराज संत निवास नसियां जैन मंदिर पर धर्म सभा को सम्बोधित किया उन्होंने कहा कि बदले की भावना से जो उपकार किया जाता है वह उपकार नहीं व्यापार है। ऐसा व्यापार करके आप धन तो कमा लेंगे पर धर्म नहीं कमा सकते। उन्होंने कहा कि धर्म का व्यापार नहीं होता करोड़ों रुपए देकर भी आप कहीं किसी दुकान से धर्म का एक अंश भी नहीं पा सकते हैं। इस देश में जन्म लेने वाले भगवान महावीर भगवान राम आदि के वंशजों को क्या हो गया है। हिंसा का परोपकार की भावना से च्यूत होने का यह परिणाम है कि रामराज्य में जहां दूध की नदियां बहती थी वहां पानी भी पर्याप्त पीने को नहीं मिल रहा है। जो देश धन्य धान्य से परिपूर्ण हो विश्व में सोने की चिड़िया के नाम से प्रसिद्ध था वह कर्ज के बोझ से लद गया है। परोपकार बाहर में नहीं पुस्तकों में नहीं विचारों में होता है। भावना में होता है अपकार मिलने पर भी उपकार नहीं छोड़ना सच्चा परोपकार है। मुनिराजो एवं त्यागी व्रतीयो को आहार देना भी परोपकार है। इस दौरान जैन मुनि प्रज्ञान सागर महाराज ने कहा कि आपको यदि अपना भाग्य चमकाना है तों अहर्निश पुरुषार्थ करो परन्तु दूसरों को मिटाने का नहीं स्वपर के उत्थान का करो। उन्होंने कहा कि सुख कभी रहता नहीं तो दुःख का भी अन्त है इस नीति को स्मरण रखना और सम्यक पुरुषार्थ में निरत रहना निश्चित ही जिस सुख शांति की प्राप्ति के लिए आप भटक रहे हैं वह आपको प्राप्त हो जाएगी। इस दौरान समाजसेवी सन्मति चंवरिया गोपाल कठमाणा जितेन्द्र चंवरिया सुशील गिन्दोडी. शंभु कठमाणा ने श्री फल चडाक र आशीर्वाद लिया। जैन समाज के प्रवक्ता विमल जौंला एवं सुनील भाणजा ने बताया कि धर्म सभा का मंगलाचरण विनिता बगड़ी ने किया। शीतकालीन प्रवास के दौरान आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज संघ का प्रतिदिन स्वाध्याय प्रतिक्रमण का निरन्तर स्वाध्याय किया जा रहा है। संत निवास पर आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज की संगीतमय आरती की गई। इसी प्रकार जैन मुनि प्रज्ञान सागर एवं मुनि प्रसिद्ध सागर महाराज द्वारा आनन्द यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। गुरु भक्त राजेश पंचोलिया एवं मीडिया प्रभारी विमल जौंला राकेश संधी ने बताया कि आगामी 19 जनवरी को निवाई में राष्ट्रीय स्तर पर चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागर जी महाराज का शताब्दी समारोह धूमधाम से मनाया जाएगा जिसमें 18 जनवरी को आचार्य वर्धमान सागर महाराज के सानिध्य में विशाल शोभायात्रा निकाली जाएगी।

सर्वोदय कॉलोनी महिला मंडल अजमेर द्वारा नए साल का आगाज

अजमेर. शाबाश इंडिया। शांतिनाथ जिनालय सर्वोदय कॉलोनी महिला मंडल अजमेर की सदस्यों ने नारेली में नए साल का आगाज णमोकार मंत्र के साथ शुरू किया ,फिर भक्तामर पाठ के साथ भजन आरती की गई, होस्ट अनामिका सुरलाया ने बताया सभी सदस्य रंग-बिरंगे ड्रेस में आई और सभी का तिलकमाला पहनाकर स्वागत किया गया। रेणु पाटनी ने बताया कि थीम गरम शॉल ठंडी शाम रखी गई और सभी ने हाउजी का आनंद लिया और मैडम में सीखा जाऊंगी एबीसीडी कखगघ के गेम में गुणमाला गंगवाल प्रथम स्थान ,द्वितीय स्थान रेनू पाटनी, तृतीय स्थान शशि गंगवाल ने प्राप्त किया।फिर सभी ने अंताक्षरी खेली और नृत्य करें। सभी विजेताओं को पुरस्कार दिए गए और अंत में स्वादिष्ट भोजन का लुफ्त उठाया। मोनिका सुरलाया ने सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

।। श्री नेमिनाथाय नमः ।।

G 22 ग्रुप (रजि.)

श्री दिगम्बर जैन समाज शास्त्री नगर, जयपुर

26 वाँ विशाल रक्तदान एवं निःशुल्क डायबिटिज जाँच शिविर

दिनांक : रविवार, 21 दिसम्बर, 2025

समय प्रातः 9.00 बजे से दोपहर 2.00 बजे तक

स्थान : राजश्री सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पानी की टंकी, शास्त्री नगर, जयपुर

उद्घाटनकर्ता

श्री नेमीचन्द जी - सुमित्रा देवी छाबड़ा

अमित - दिप्ती जैन, सुमित - निधि जैन

(समाज श्रेष्ठी) नलवाड़ी वाले

दीप प्रज्ज्वलन

श्री कमल कुमार जैन

समाजश्रेष्ठी एवं उद्योगपति

विशिष्ट अतिथी

श्री विजय जी - सरिता तोलम्बिया

पीयूष. आयुषी

श्री लक्ष्मीनाथ लॉजिस्टिक, विद्याधर नगर

डॉ रामप्रसाद भड़िया .

अध्यक्ष मानवसेतू फाउन्डेशन (राजस्थान)

स्वागताध्यक्ष

श्री निर्मल जी - अनिला कटारिया

(अध्यक्ष, श्री दिगम्बर जैन समाज समिति)

कार्यक्रम संयोजक

G 22 ग्रुप (रजि.)

डॉ. विपिन जैन - डॉ. अंशु जैन 9414055208

विजय ठोलिया - पुष्पा ठोलिया 9829366612

प्रदीप काला - नीलम काला 9414047152

चन्द्र प्रकाश - गुणमाला जैन 9829166660

प्रवीण बोहरा - पुनिता बोहरा 9829573823

मनोज जैन - श्वेता जैन 8386039233

मुसीबत आये तो होश ना खोयें और खुशी आये तो जोश पर कन्ट्रोल करें: अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

गाजियाबाद. शाबाश इंडिया

अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने अपने प्रवचन में कहा कि जिस तरह खुशी और मुसीबत बिना किसी अपॉइंटमेंट के आ जाती है, उसी तरह अपने आप को हमेशा तैयार रखें..मुसीबत आये तो होश ना खोयें और खुशी आये तो जोश पर कन्ट्रोल करे। अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज ससंघ तरुणसागरम तीर्थ पर विराजमान हैं उनके सानिध्य में वहां विभिन्न धार्मिक कार्योंकम संपन्न हो रहें हैं उसी श्रृंखला में आज उन्हें राजस्थान जयपुर के गुरु भक्तों ने जयपुर आने का श्रीपल भेट किया। उसमें श्री दिगम्बर जैन पद यात्रा संघ जयपुर के संरक्षक एवं राजस्थान जैन सभा जयपुर के अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन, राजस्थान जैन सभा जयपुर के उपाध्यक्ष एवं राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चन्द्र गिरी बैनाड के मंत्री एवं राजस्थान जैन सभा जयपुर के कोषाध्यक्ष अमर चन्द दीवान, राजेश रॉवका, राजेन्द्र जैन मोजमाबाद, योगेश कासलीवाल, आशीष जैन बगरु, प्रितेश छाबड़ा, विपुल छाबड़ा आदि मौजूद थे उसी श्रृंखला में उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने कहा कि बहुत कम लोग है जो आप बीती और पर बीती को ठीक से समझते हैं। यदि हम पर दुःख का पहाड़ आया और हमने जैसे तैसे उसका सामना किया, ठीक वैसे ही - जब किसी पर दुःख आये तो हम उसी भाव से उसे समझें। वरना इस दुनिया में ऐसे लोग ज्यादा है, जो कहते हैं - फूल आहिस्ते तोड़ो - फूल बड़े नाजुक है इसे ही कहते हैं - दुहरा जीवन। सबका जीवन मूल्यवान है। हमारी खुशी और दूसरों की सफलता हमारे जीवन की उन्नति में वरदान सिद्ध हो सकती है। अधिकांश दुःख, परेशानी, पीड़ा, दर्द हमारी सोच पर निर्भर करते हैं। विचारों और भावनाओं के इन दो रूपों की तुलना हमें दूसरों के सुख शान्ति कल्याण के अनमोल जीवन बनाने में कारण बनेगी।तीन मित्र धन की खोज में घुम रहे थे। चलते चलते अचानक एक मित्र को चांदी की खान दिख गई ओर वह कहते कहते चला गया- हमको हमारा मुकाम मिल गया। दूसरा मित्र उदास परेशान होकर आगे चला जा रहा था कि अचानक उसे भी सोने की खान दिखाई दी ओर वह खुशी से झूम गया और खदान में पहुंच गया। तीसरा मित्र - मरता क्या ना करता, रोते बिलखते, पैर पटकते हुये चला जा रहा था कि अचानक उसे हीरे की खदान दिखी और वह देखते ही बावला हो गया। जिसके भाग्य में जो था वह उसको मिल गया। इसलिए किसी की खुशनसीबी से अपने आप को हैरान-परेशान मत करो बल्कि सोचो -- परमात्मा के पास देर है अन्धेर नहीं...!

-नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल

पर भावों से बचकर आत्म स्वभाव में रुचि ही आत्म हित का उपाय: भावलिंगी संत दिगम्बराचार्य श्री विमर्शसागर जी मुनिराज

बड़ौत में हुयी 35 पीछीधारी संयमियों की शीतकालीन मंगल कलश स्थापना

उ.प्र. बड़ौत. शाबाश इंडिया। जीवन है पानी की बूंदे महाकाव्य के मूल रचनाकार, संघ शिरोमणि भावलिंगी संत दिगम्बराचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज, जिनके पादमूल में 35 पीछी धारी संयमी साधक संयम की साधना, रत्नत्रय की आराधना में संलग्न रहते हैं। ऐसे विशाल चतुर्विधसंघ के अधिनायक श्रेष्ठ दिगम्बराचार्य का ससंघ शीतकालीन प्रवास धर्मनगरी बड़ौत में हो रहा है। दिसम्बर माह की प्रचण्ड शीत-ठण्ड के साथ आचार्य गुरुवर के श्रीमुख से होगी शीतकालीन वाचना । प्रातः काल की धर्मसभा में श्री रयणसार महाग्रंथ पर आचार्य गुरुवर धर्मोपदेश प्रदान करेंगे, वहीं दोपहर काल में श्री षट्खण्डागम जी महाग्रंथ की धवला पुस्तक-1 पर आचार्य संघ के सानिध्य वाचना होगी, जिसके वान्चना प्रमुख डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत रहेंगे। 18 दिसम्बर की प्रातः बेला की धर्मसभा में आचार्य श्री के चतुर्विध संघ सानिध्य में शीतकालीन वाचना का मंगल कलश स्थापित किया गया ।वाचना के कलश स्थापना का परम सौभाग्य श्रावक श्रेष्ठी जिनागम पंथी ब्रिजेन्द्र जैन, तरुण जैन (भगवती स्टील) परिवार ने किया। शीतकालीन वाचना कलशस्थापना में उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुये आचार्य श्री ने कहा- संसार में जीवात्मा तब तक ही रहता है,जब तक जीव के अंदर संसार रहता है।बाहर का संसार चतुर्गति रूप है तो आपके अंदर रहने वाला संसार आपके ही राग-देष-मोह रूप विभाव परिणाम हैं। यह जीव अपने ही अंदर के रागादि विभावों से प्रेरित होकर अपने संसार को बढ़ाता रहता है। परम हितकारी निर्ग्रन्थ मुनिराज भव्य जीवों को राग-द्वेष-मोह आदि विभावों से बचने का उपाय बतलाते हैं। आत्म हित चाहने वाले भव्य जीवात्मा रागादि विभावों से स्वयं की रक्षा करते हुये पर पदार्थ एवं पर भावों से रुचि हटाकर आत्म स्वभाव में ही रुचि बढ़ाते हुये, निज आत्म तत्त्व में लीन होता है। -सोनल जैन की रिपोर्ट

सूर्य नमस्कार जीवन रक्षक, रोग निवारक: भुवनेश्वरी मालोंत

जयपुर. शाबाश इंडिया। महावीर इंटरनेशनल की ई चौपाल में बांसवाड़ा की मशहूर योग प्रशिक्षिका वीरा भुवनेश्वरी मालोंत ने बताया कि सूर्य नमस्कार जीवन रक्षक, रोग निवारक हैं। महावीर इंटरनेशनल की ई चौपाल में बांसवाड़ा की मशहूर योग प्रशिक्षिका वीरा भुवनेश्वरी मालोंत ने अपने योग अभ्यासों के माध्यम से दर्शकों को उत्तम स्वास्थ्य एवं रोग मुक्ति के लिए विविध योग क्रियाओं, आसनों, प्राणायाम तथा संतुलित जीवन शैली आधारित महत्वपूर्ण जानकारियां देकर सभी के उत्तम स्वास्थ्य का मार्ग प्रशस्त किया। महावीर इंटरनेशनल के इंटरनेशनल डायरेक्टर नॉलेज शेयरिंग एवं ई चौपाल अजीत कोठिया ने बताया की बांसवाड़ा में विगत 21वर्षों से योग प्रशिक्षिका के रूप में अपनी सेवाएं दे रही वीरा भुवनेश्वरी मालोंत ने सूर्य नमस्कार को जीवन रक्षक एवं रोग निवारक बताते हुए सभी से प्रतिदिन अनुलोम विलोम, कपाल भाती, भ्रामरी, मंडूकासन जैसी योग प्राणायाम क्रियाएं कर उत्तम स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने का आह्वान किया। छोटे छोटे रोगों को विभिन्न मुद्राओं के माध्यम से तथा एक्यूप्रेशर द्वारा दूर करने की तकनीके भी बताई। कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष गौतम राठौड़, महेश कुमार मूंड, मीना खीवसरा ,पृथ्वीराज जैन, संजय बेद, विमला राका, सुमेरसिंह कर्णावत, डॉ बी सी सोढ़ी सहित कई वीर वीराओ ने अपनी जिज्ञासाओं का समाधान किया। प्रारंभ में वीरा निधि गांधी ने प्रार्थना भावना दिन रात मेरी सब सुखी संसार हो से सेशन का आगाज किया। संचालन अजीत कोठिया ने किया, आभार वीरा आरती मूंड ने किया। चौपाल में 48लोगों ने शिरकत की।लोंत ने अपने योग अभ्यासों के माध्यम से दर्शकों को उत्तम स्वास्थ्य एवं रोग मुक्ति के लिए विविध योग क्रियाओं, आसनों, प्राणायाम तथा संतुलित जीवन शैली आधारित महत्वपूर्ण जानकारियां देकर सभी के उत्तम स्वास्थ्य का मार्ग प्रशस्त किया। महावीर इंटरनेशनल के इंटरनेशनल डायरेक्टर नॉलेज शेयरिंग एवं ई चौपाल अजीत कोठिया ने बताया की बांसवाड़ा में विगत 21वर्षों से योग प्रशिक्षिका के रूप में अपनी सेवाएं दे रही वीरा भुवनेश्वरी मालोंत ने सूर्य नमस्कार को जीवन रक्षक एवं रोग निवारक बताते हुए सभी से प्रतिदिन अनुलोम विलोम, कपाल भाती, भ्रामरी, मंडूकासन जैसी योग प्राणायाम क्रियाएं कर उत्तम स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने का आह्वान किया। छोटे छोटे रोगों को विभिन्न मुद्राओं के माध्यम से तथा एक्यूप्रेशर द्वारा दूर करने की तकनीके भी बताई। कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष गौतम राठौड़, महेश कुमार मूंड, मीना खीवसरा ,पृथ्वीराज जैन, संजय बेद, विमला राका, सुमेरसिंह कर्णावत, डॉ बी सी सोढ़ी सहित कई वीर वीराओ ने अपनी जिज्ञासाओं का समाधान किया। प्रारंभ में वीरा निधि गांधी ने प्रार्थना भावना दिन रात मेरी सब सुखी संसार हो से सेशन का आगाज किया। संचालन अजीत कोठिया ने किया, आभार वीरा आरती मूंड ने किया। चौपाल में 48लोगों ने शिरकत की।

वेद ज्ञान

सपनों का विशेष महत्व

भारतीय ज्योतिष और स्वप्न-शास्त्र में सपनों का विशेष महत्व माना गया है। खासतौर पर जब स्वप्न में किसी देवता के दर्शन हों, तो उसे केवल मन की कल्पना नहीं, बल्कि भविष्य के संकेतों से जोड़ा जाता है। शनिदेव को न्याय, कर्मफल और अनुशासन का देवता माना गया है। कहा जाता है कि वे मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार फल देते हैं। ऐसे में यदि शनिदेव स्वप्न में विभिन्न वाहनों पर सवार होकर दिखाई दें, तो उसके अलग-अलग अर्थ निकाले जाते हैं। स्वप्न में शनिदेव का गिद्ध पर सवार दिखाई देना ज्योतिषशास्त्र में अशुभ संकेत माना गया है। गिद्ध शोक और मृत्यु का प्रतीक माना जाता है। यदि कोई व्यक्ति इस रूप में शनिदेव को देखता है, तो यह आने वाले समय में मानसिक कष्ट, हानि या किसी प्रिय के स्वास्थ्य को लेकर चिंता का संकेत हो सकता है। ऐसे स्वप्न के बाद शनि शांति के उपाय, दान-पुण्य और संयमित जीवन अपनाने की सलाह दी जाती है। यदि शनिदेव कौए पर सवार होकर सपने में दिखाई दें, तो इसे भी अनुकूल नहीं माना जाता। कौआ शनि से जुड़ा प्रमुख पक्षी है, लेकिन स्वप्न में इस रूप का दर्शन जीवन में अशांति, पारिवारिक विवाद और सामाजिक तनाव का संकेत देता है। ऐसे समय व्यक्ति को वाणी और व्यवहार में संयम रखना चाहिए, क्योंकि अपमान या गलतफहमी की स्थिति बन सकती है। इसके विपरीत, शनिदेव का हाथी पर सवार होकर सपने में आना अत्यंत शुभ माना गया है। हाथी वैभव, स्थिरता और ऐश्वर्य का प्रतीक है। विशेष रूप से साढ़ेसाती या ढैय्या के समय यदि यह स्वप्न आए, तो माना जाता है कि कठिन समय के बाद सौभाग्य का उदय होने वाला है। शनि चालीसा में भी वर्णन मिलता है कि जब शनि हाथी पर आते हैं, तो अपने साथ लक्ष्मी का आगमन कराते हैं, अर्थात धन, प्रतिष्ठा और समृद्धि में वृद्धि होती है। कुछ ग्रंथों में शनिदेव का एक वाहन मोर भी बताया गया है। यदि सपने में शनिदेव मोर पर सवार दिखाई दें, तो यह शुभ समाचार, सफलता और मनोकामना पूर्ति का संकेत देता है। साढ़ेसाती के दौरान ऐसा स्वप्न आना यह दशार्ता है कि शनि की कठोर परीक्षा अब कृपा में बदलने वाली है और जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आने वाले हैं।

संपादकीय

भारत-ओमान संबंध नई ऊंचाइयों की ओर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दो दिवसीय ओमान यात्रा ने भारत और ओमान के बीच सदियों पुराने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों को नई गति और दिशा प्रदान की है। यह यात्रा उनके तीन देशों जॉर्डन, इथियोपिया और ओमान के दौरे के अंतिम चरण में संपन्न हुई, जो ओमान के शासक सुल्तान हैथम बिन तारिक के निमंत्रण पर आयोजित की गई थी। यह प्रधानमंत्री मोदी की ओमान की दूसरी यात्रा रही और यह दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की 70वीं वर्षगांठ के साथ एक महत्वपूर्ण संयोग भी रही। 17 दिसंबर को ओमान की राजधानी मस्कट पहुंचने पर प्रधानमंत्री मोदी का भव्य स्वागत किया गया। ओमान के रक्षा मामलों के उप प्रधानमंत्री सैय्यद शिहाब बिन तारिक अल सईद ने हवाई अड्डे पर गार्ड ऑफ ऑनर के साथ उनका अभिनंदन किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया पर लिखा कि ओमान पक्की दोस्ती और गहरे ऐतिहासिक संबंधों की भूमि है और यह यात्रा सहयोग के नए अवसर तलाशने का अवसर प्रदान करेगी। यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी और सुल्तान हैथम बिन तारिक के बीच उच्चस्तरीय वार्ता हुई। इस बैठक में व्यापार, निवेश, ऊर्जा, रक्षा, सुरक्षा, प्रौद्योगिकी, कृषि और संस्कृति जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहयोग की व्यापक समीक्षा की गई। साथ ही क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर भी विचारों का आदान-प्रदान हुआ, जिसमें पश्चिम एशिया की स्थिरता, समुद्री सुरक्षा और वैश्विक शांति जैसे विषय शामिल रहे। इस यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक पहलू भारत-ओमान व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) पर हस्ताक्षर रहा। यह समझौता दोनों देशों के बीच आर्थिक और व्यापारिक संबंधों को नई ऊंचाई देगा। वर्तमान में भारत और ओमान के बीच द्विपक्षीय व्यापार लगभग 10.5 अरब अमेरिकी डॉलर का है। भारत ओमान को खनिज ईंधन, रसायन, अनाज और मशीनरी का निर्यात करता है, जबकि ओमान से पेट्रोलियम उत्पाद और यूरिया का आयात करता है। सीईपीए के माध्यम से टेक्सटाइल, फूड प्रोसेसिंग, ऑटोमोबाइल, रत्न-आभूषण और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में नए निवेश और रोजगार के अवसर सृजित होंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने इंडिया-ओमान बिजनेस फोरम को संबोधित करते हुए कहा कि यह समझौता दोनों देशों के संबंधों में नई आत्मविश्वास और ऊर्जा का संचार करेगा। उन्होंने मांडवी से मस्कट तक अरब सागर को एक मजबूत पुल बताते हुए कहा कि यह समुद्र केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आर्थिक सेतु भी है। रक्षा और सामरिक सहयोग भी इस यात्रा का एक प्रमुख आयाम रहा। ओमान खाड़ी क्षेत्र में भारत का एक विश्वसनीय और निकटतम रक्षा साझेदार है। दुक्म पोर्ट पर भारत की रणनीतिक पहुंच और समुद्री सहयोग दोनों देशों की सामरिक साझेदारी को और मजबूत करता है। इसके अतिरिक्त, आर्थिक विविधीकरण, व्यापार और समुद्री सहयोग से जुड़े चार महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापनों पर भी हस्ताक्षर किए गए। प्रधानमंत्री मोदी ने ओमान में बसे भारतीय प्रवासी समुदाय से भी मुलाकात की। -राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

इच्छा मृत्युः एक मानवीय प्रश्न

ललित गर्ग

इच्छा मृत्यु, यानी व्यक्ति की अपनी इच्छा के अनुसार जीवन का अंत, भारत में लंबे समय से सामाजिक, नैतिक और कानूनी बहस का विषय रही है। यह प्रश्न केवल मृत्यु से जुड़ा नहीं है, बल्कि असहनीय पीड़ा, मानवीय गरिमा, करुणा और आत्मनिर्णय के अधिकार से गहराई से संबंधित है। हाल के वर्षों में सामने आए कई मामले जिनमें लंबे समय से कोमा या चेतनाहीन अवस्था में पड़े मरीज शामिल हैं इस बहस को बार-बार जीवंत करते रहे हैं। ऐसे परिवार वर्षों तक भावनात्मक, मानसिक और आर्थिक यातना झेलते हैं, जबकि कानून उनके लिए कोई स्पष्ट और मानवीय रास्ता तय नहीं कर पाया है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने जीवन को कृत्रिम रूप से लंबे समय तक बनाए रखने की क्षमता तो विकसित कर ली है, लेकिन यह प्रश्न आज भी अनुत्तरित है कि जब जीवन केवल पीड़ा, चेतनाहीनता और निरर्थक जैविक क्रिया बन जाए, तब उसे ढोते रहना ही मानवता है या सम्मानपूर्वक विदा देना अधिक करुणामय विकल्प। असाध्य बीमारी, लंबे कोमा और पूर्ण चेतनाशून्य अवस्था में फंसे लोगों के लिए गरिमापूर्ण मृत्यु का प्रश्न, जीवन जितना ही महत्वपूर्ण हो जाता है। कानूनी दृष्टि से भारत में इच्छा मृत्यु को आज भी संदेह और अपराध की दृष्टि से देखा जाता रहा है। भारतीय दंड संहिता की धाराएं लंबे समय तक इसमें बाधा बनी रहीं। यद्यपि 2017 के मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम में आत्महत्या के प्रयास को मानसिक पीड़ा का परिणाम मानते हुए आंशिक राहत दी गई, लेकिन इच्छा मृत्यु पर अब भी कोई समग्र कानून मौजूद नहीं है। संविधान का अनुच्छेद 21 जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार देता है, पर यह बहस जारी है कि क्या इसमें गरिमापूर्ण मृत्यु का अधिकार भी शामिल है। भारतीय न्यायपालिका में इस मुद्दे पर एक महत्वपूर्ण मोड़ अरुणा शानबाग मामला में आया, जब सर्वोच्च न्यायालय ने सक्रिय इच्छा मृत्यु को अस्वीकार करते हुए सशर्त निष्क्रिय इच्छा मृत्यु की अनुमति दी। अदालत ने माना कि असाध्य स्थिति में, विशेषज्ञों की राय और न्यायिक निगरानी में जीवन रक्षक उपचार हटाया जा सकता है। इसके बाद कॉमन कॉज बनाम भारत संघ में यह ऐतिहासिक टिप्पणी आई कि जीवन का अधिकार केवल जीवित रहने तक सीमित नहीं, बल्कि गरिमापूर्ण मृत्यु का अधिकार भी इसमें निहित है। इसी फैसले में 'लिविंग विल' को मान्यता दी गई, लेकिन जटिल प्रक्रियाओं ने इसे आम नागरिक के लिए लगभग अप्राप्य बना दिया। इच्छा मृत्यु की आवश्यकता असाध्य कैंसर, गंभीर न्यूरोलॉजिकल रोगों और अंतिम अवस्था की बीमारियों में और अधिक स्पष्ट होती है, जहां जीवन पीड़ा का पर्याय बन जाता है। लंबे उपचार परिवारों को तोड़ देते हैं और सीमित चिकित्सा संसाधनों पर भी प्रश्न खड़ा करते हैं। विरोधियों का तर्क है कि इसका दुरुपयोग हो सकता है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय अनुभव बताते हैं कि स्पष्ट कानून और बहुस्तरीय निगरानी से इन आशंकाओं को नियंत्रित किया जा सकता है। नीदरलैंड्स, बेल्जियम, कनाडा और स्विट्जरलैंड जैसे देशों ने यह संतुलन साधा है। भारत में जैन धर्म की संथारा का भी उल्लेख होता है, जो पहली दृष्टि में इच्छा मृत्यु से मिलती-जुलती लगती है, पर दर्शन, उद्देश्य और प्रक्रिया में मौलिक रूप से भिन्न है। संथारा आध्यात्मिक साधना है, जबकि इच्छा मृत्यु आधुनिक विधिक अवधारणा है, जिसका उद्देश्य असहनीय पीड़ा से मुक्ति है। अब समय आ गया है कि भारत संकोच छोड़कर इच्छा मृत्यु पर स्पष्ट, सख्त और मानवीय कानून बनाए ऐसा कानून जो रोगी की गरिमा और इच्छा को सर्वोपरि माने, परिजनों को अनावश्यक पीड़ा से बचाए।

जैन समाज के गौरव एवं राजस्थान सरकार में माननीय मंत्री गौतम दक के जन्मदिवस पर सेवा और संवेदना का अनुपम उदाहरण

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन समाज के गौरव तथा राजस्थान सरकार में माननीय मंत्री गौतम दक के जन्मदिवस के पावन अवसर पर जैन समाज द्वारा सेवा, करुणा और मानवता का उत्कृष्ट परिचय प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर गौ-सेवा के अंतर्गत गौ माता को हरा चारा खिलाया गया एवं उनके संरक्षण तथा कल्याण का संकल्प लिया गया। साथ ही समाज के निराश्रित एवं जरूरतमंद लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कंबल,फल एवं बिस्कुट वितरित किए गए, जिससे मानवीय संवेदनाओं को सशक्त आधार मिला। दिगम्बर जैन महासमिति मानसरोवर संभाग के अध्यक्ष राजेंद्र शाह ने बताया यह सेवा कार्य जैन धर्म के मूल सिद्धांत अहिंसा, करुणा एवं परोपकार का सजीव उदाहरण है तथा समाज को यह सकारात्मक संदेश देता है कि किसी भी उत्सव की सार्थकता सेवा से जुड़ने पर ही पूर्ण होती है। भाजपा मंडल मंत्री एवम कार्यक्रम संयोजक सुनील जैन गंगवाल ने बताया मंत्री गौतम दक का जन्मदिवस सेवा कार्यों के माध्यम से मनाना जैन समाज की प्रेरणादायक परंपरा है। ऐसे आयोजन समाज में संवेदना, सहयोग और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करते हैं। उन्होंने सभी समाजजनों का आभार

व्यक्त करते हुए कहा कि भविष्य में भी इसी प्रकार के सेवा कार्य निरंतर किए जाते रहेंगे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि भाजपा के पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष एवं पूर्व जिला अध्यक्ष सुनील कोठारी, प्रदेश महामंत्री ओबीसी मोर्चा के महामन्त्री सुनील यादव, पूर्व पार्षद आशीष शर्मा, अन्तराष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के उपाध्यक्ष लोकेश सोगानी, भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारी आशीष जैन, नवीन भण्डारी, जैन समाज के पदाधिकारी राजेन्द्र शाह, महावीर बाकलीवाल, सुनील गोधा, गजेंद्र गोपाल अग्रवाल, सुनीता गोधा, अनीता गंगवाल, सिद्धार्थ कासलीवाल आदि उपस्थित रहे।

शैक्षिक अधिवेशन में सैकड़ों शिक्षक करेंगे शिरकत

शिवगंज(राजस्थान). शाबाश इंडिया। राजस्थान शिक्षक संघ (प्रगतिशील) का विशाल राज्य स्तरीय शिक्षक अधिवेशन का उद्घाटन समारोह 19 दिसंबर को राजस्थान विद्यापीठ डबोक उदयपुर में आयोजित होगा जिसमें सिरोही जिले से सैकड़ो शिक्षक सम्मेलन में शिरकत करेंगे। राजस्थान शिक्षक संघ (प्रगतिशील)के जिला प्रवक्ता गुरुदीन वर्मा के अनुसार संघ (प्रगतिशील) के जिला मंत्री छगनलाल भाटी ने बताया कि अधिवेशन में मुख्य उद्घाटनकर्ता पुष्कर लाल डांगी विधायक मावली, मुख्य अतिथि रघुवीर मीणा पूर्व मंत्री एवं सांसद जिलाध्यक्ष डीसीसी देहात उदयपुर, अध्यक्ष भंवरलाल गुर्जर चांसलर विद्यापीठ डबोक, अति विशिष्ट अतिथि प्रीति गजेंद्र सिंह शक्तावत पूर्व विधायक वल्लभनगर, अति विशिष्ट अतिथि शिव सिंह सारंगदेवोत वाइस चांसलर विद्यापीठ डबोक, श्यामलाल आमेटा जिला महासचिव कांग्रेस कमेटी एवं संगठन संरक्षक, फतहसिंह राठौड़ जिलाध्यक्ष कांग्रेस कमेटी उदयपुर, मुख्य वक्ता धूलीराम डांगी सभा अध्यक्ष, नीरज शर्मा प्रदेश अध्यक्ष, धर्मेंद्र गहलोत प्रदेश मुख्य महामंत्री बतौर अतिथि अधिवेशन में शिरकत करेंगे। इस अवसर पर शिक्षकों की विभिन्न शैक्षिक बिंदुओं पर खुले अधिवेशन में चर्चा होगी। इस चर्चा के आधार पर प्रस्ताव तैयार कर राज्य सरकार को भेजे जाएंगे। सिरोही जिले के प्रत्येक तहसील से 30 शिक्षकों का यानी जिले से 150 शिक्षकों का दल उदयपुर के लिए शुक्रवार को रवाना होगा। व्यापक स्तर पर जाने की तैयारी पूरी कर ली है।

सांसद खेल महोत्सव जोधपुर लोकसभा क्षेत्र के विधानसभा क्षेत्र खेल प्रतियोगिता में अपना पंचम लहराया

जोधपुर. शाबाश इंडिया। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय निंबो का गाँव, ब्लॉक बालेसर जोधपुर की दिव्या ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया ' भारती एयरटेल फाउंडेशन के क्वालिटी सपोर्ट कार्यक्रम के तहत सांसद खेल महोत्सव के लोकसभा क्षेत्र (जिला स्तरीय) खेल प्रतियोगिता में योगा प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रधानाचार्य एवं पी.ई.ई.ओ. पन्नालाल चौहान ने बताया कि अंडर 19 वर्ष छात्रा वर्ग में विद्यालय की दिव्या का चयन हुआ था, जिसने शेरगढ़ में आयोजित प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान जीता। शारीरिक शिक्षक कैलाश कुमार ने बताया की वह आश्वत है की यह विद्यार्थी राज्य स्तर पर भी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर चुकी है। इस उपलक्ष में विद्यालय शिक्षकों, सभी ग्रामीणों एवं विद्यार्थियों ने खुशियाँ व्यक्त की।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

राजेश जैन दद्दू. शाबाश इंडिया

इंदौर। श्री दिगंबर जैन उदासीन आश्रम ट्रस्ट और कुंदकुंद ज्ञानपीठ इंदौर की ओर से आयोजित प्राकृत वांग्मय एवं सिरि भूवलय के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध आयाम पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के बारे में गुरुवार को प्रेस वार्ता ली गई। इसमें दो दिवसीय भव्य आयोजन के बारे में बिंदुबार जानकारी प्रदान की गई। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि श्री दिगंबर जैन उदासीन आश्रम ट्रस्ट के अध्यक्ष अमित कासलीवाल ने विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि 20 और 21 दिसंबर को दो दिवसीय संगोष्ठी में देशभर के विद्वान प्रोफेसर और कुलगुरुओं का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। उन्होंने कहा कि अंतमुर्खी मुनिश्री पूज्यसागर जी महाराज के सानिध्य में होने जा रहे इस दो दिन के समारोह में विभिन्न सत्रों में अलग-अलग यूनिवर्सिटी और क्षेत्र के विद्वानों को सिरि भूवलय के बारे में विस्तार से विचार मीमांसा के लिए आमंत्रित किया गया है। कार्यक्रम का शुभारंभ शनिवार 20 दिसंबर को उद्घाटन सुबह 9 बजे किया जाएगा। पहले दिन तीन सत्र होंगे। कासलीवाल ने बताया कि इसमें प्राकृत विद्या के विविध आयाम, प्राचीन पांडुलिपियों की ऐतिहासिकता, सत्यता की कसौटी पर सिरि भूवलय विषयों पर विद्वान अतिथि अपनी विवेचनाएं प्रस्तुत करेंगे। दूसरे दिन रविवार 21 दिसंबर को सुबह 9 बजे से सत्र आरंभ होंगे। इनमें भी प्राकृत वांग्मय का संस्कृति संरक्षण और संवर्द्धन में योगदान , अद्वितीय आलौकिक सिरिभूवलय पर चर्चा होगी। इसके अलावा अंत में पुरस्कार एवं सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा। इस दो दिवसीय आयोजन में देशभर के 40 से अधिक विद्वान अतिथि भाग लेंगे। जिनकी स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। प्रेस वार्ता में ट्रस्ट के अध्यक्ष अमित कासलीवाल, एडमिनिस्ट्रेटर डॉ. अरविंद कुमार जैन, श्रीफल जैन न्यूज की संपादक रेखा संजय जैन, संजय पापड़ीवाल सहित बड़ी संख्या में मीडियाकर्मी आदि मौजूद रहे।

सरकारी पेटेंट रिपोर्ट में जियो सबसे आगे, 1,037 अंतरराष्ट्रीय पेटेंट फाइल

जियो प्लेटफॉर्म्स देश का सबसे बड़ा वैश्विक पेटेंट फाइलर, सीआईआई ने भी जियो को भारत के शीर्ष इनोवेटर्स में किया शामिल

नई दिल्ली. शाबाश इंडिया। भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अधीन कंट्रोलर जनरल ऑफ पेटेंट्स, दसिग्नस एंड ट्रेड मार्क्स की 2024-25 की वार्षिक रिपोर्ट में जियो प्लेटफॉर्म्स को भारत का सबसे बड़ा वैश्विक पेटेंट फाइलर बताया गया है। वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, जियो प्लेटफॉर्म्स ने एक वर्ष में 1,037 अंतरराष्ट्रीय पेटेंट दाखिल किए हैं। यह संख्या रैंकिंग में दूसरे से दसवें स्थान तक मौजूद सभी भारतीय कंपनियों और संस्थानों द्वारा दाखिल पेटेंट्स के कुल जोड़ से दोगुनी से भी अधिक है। टीवीएस मोटर (238), सीएसआईआर (70), आईआईटी मद्रास (44) और ओला इलेक्ट्रिक (31) जैसे नाम इस दौड़ में काफी पीछे नजर आते हैं। भारतीय पेटेंट्स को जोड़ लें तो जियो द्वारा 2024-25 में कुल 1,654 पेटेंट आवेदन किए गए। 31 मार्च 2025 तक कंपनी के पास 485 स्वीकृत पेटेंट थे, जिनमें बड़ा हिस्सा 5जी, 6जी और नेटवर्क टेक्नोलॉजी से जुड़ा है। इन आंकड़ों से साफ है कि जियो अब केवल एक टेलीकॉम ऑपरेटर नहीं, बल्कि भारत की अग्रणी डीप-टेक कंपनियों में अपनी मजबूत मौजूदगी दर्ज करा चुका है। सरकारी आंकड़ों के साथ-साथ इंडस्ट्री ने भी जियो को एक मजबूत ग्लोबल आईपी प्लेयर के तौर पर मान्यता दी है। हाल ही में सीआईआई इंडस्ट्रियल इनोवेशन अवॉर्ड्स 2025 में जियो प्लेटफॉर्म्स को भारत की टॉप-20 इनोवेटिव कंपनियों में शामिल किया गया, वहीं लार्ज आईसीटी कैटेगरी में उसे 'बेस्ट पेटेंट पोर्टफोलियो' का रनर-अप अवॉर्ड भी मिला। पेटेंट फाइलिंग के पीछे मजबूत आर एंड डी निवेश भी एक अहम कारण है। एफआई 25 में रिलायंस ने 4,185 करोड़ रुपये से अधिक आर एंड डी पर खर्च किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 15 प्रतिशत अधिक है। बीते तीन वर्षों में कंपनी का वार्षिक एंड डी निवेश 1,500 करोड़ रुपये से ज्यादा बढ़ चुका है।

वेणीचंद जी महाराज के 119वें पुण्य स्मृति दिवस पर शीतलधाम निर्माण का संकल्प

बनेड़ा में 30 लाख से अधिक की दान घोषणाएं

बनेड़ा. शाबाश इंडिया

मेवाड़ गौरव पूज्य रविन्द्र मुनि की प्रेरणा से घोर अभिग्रहधारी, तपस्वी एवं मानवता के प्रतीक वेणीचंदजी महाराज के 119वें पुण्य स्मृति दिवस के अवसर पर आचार्य शीतलदास जी महाराज की निर्वाण भूमि बनेड़ा को पावन धाम के रूप में विकसित करने हेतु दानदाताओं ने दिल खोलकर सहयोग किया। इस अवसर पर 30 लाख रुपये से अधिक की दान राशि की घोषणाएं की गईं। गुरुवार को बनेड़ा में आयोजित पुण्य स्मृति समारोह में मेवाड़ गौरव रविन्द्र मुनि,रामस्नेही संत निर्मलराम, रामविश्वास तथा दिवाकर ज्योति साध्वी प्रतिभा कंवर आदि ठाणा का सानिध्य प्राप्त हुआ। श्रद्धालुओं ने वेणीचंद जी महाराज के तप, त्याग और साधना का भाव पूर्ण गुणगान कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर मेवाड़ गौरव रविन्द्र मुनि ने कहा कि वेणीचंद जी महाराज केवल एक संत नहीं, बल्कि साधना और करुणा की जीवंत प्रतिमूर्ति थे। वे घोर तपस्वी, वचन सिद्धि एवं लब्धि के धनी थे, जिनका संपूर्ण जीवन मानवता के कल्याण के लिए समर्पित रहा। उन्होंने कहा कि वेणीचंद जी महाराज के प्रति भक्तों की आस्था सामान्य श्रद्धा नहीं, बल्कि भगवान तुल्य विश्वास थी, जो आज भी जीवंत है। दिवाकर ज्योति साध्वी प्रतिभा कंवर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वेणीचंद जी महाराज का जीवन आध्यात्मिक चेतना का अद्भुत उदाहरण है। उन्होंने बताया कि महाराज के देवलोक गमन के पश्चात उनके वस्त्रों का अग्नि संस्कार में न जलना उनकी दिव्यता और तप की सिद्धि का प्रतीक है। वे कलियुग में ईश्वर तुल्य अवतार के रूप में श्रद्धालुओं के हृदय में आज भी विराजमान हैं। आचार्य शीतलदास स्मारक निर्माण व्यवस्था समिति के महेंद्र सिंह खारीवाल ने बताया कि समारोह की अध्यक्षता मूलचंद डांगी एवं कंवरलाल सूरिया ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में नवरतन मल बंब तथा राजकीय मुख्य अतिथि के रूप में एसडीएम श्रीकांत व्यास उपस्थित रहे। अति विशिष्ट अतिथि गोपाल चरण एवं कॉन्फ्रेंस के प्रांतीय अध्यक्ष आनंद चपलोत उपस्थित रहे। सभी अतिथियों का शाल, उपरणा एवं स्मृति चिन्ह कर सम्मान किया गया। राजेंद्र सिंघवी एवं हेमंत बाबेल ने जानकारी देते हुए बताया कि शीतल पावन धाम निर्माण हेतु मीठ्ठालाल सिंघवी, राजेंद्रझपुष्पा गोखरू, लक्ष्मण सिंहझसंजूलता बाबेल,जतन सिंह रोशनलाल सुरेंद्र सिंह डांगी सहित ने पांच-पांच लाख रुपये की दान राशि देने की घोषणा की। वहीं मूलचंद डांगी, धर्मचंद रातड़िया, राजेंद्र सिंघवी, प्रदीप पारख,हेमंत बाबेल, महेंद्र सिंह चंद्र सिंह खारीवाल, मान सिंह कांठेड़, सुशील जीतेश चपलोत, निर्मल-सुरेश लोढ़ा,पारसमल - सुशील आंचलिया सहित गुरु भक्तों ने भी लाखों रुपये की दान राशि लिखवाकर धर्मकार्य में सहभागिता निभाई। पुण्य स्मृति समारोह में भीलवाड़ा, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, बेंगू, भकरी, नंदराय, कोटड़ी, मांडलगढ़, शाहपुरा, बड़ा महुआ, सिंद्रीयास, लूलास, ढिकोला, तस्वारिया, करमड़ास, इंदौर तथा मांडल सहित मेवाड़ और आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में गुरुभक्तो की उपस्थित रही। कार्यक्रम का संचालन सुशील आंचलिया ने किया।

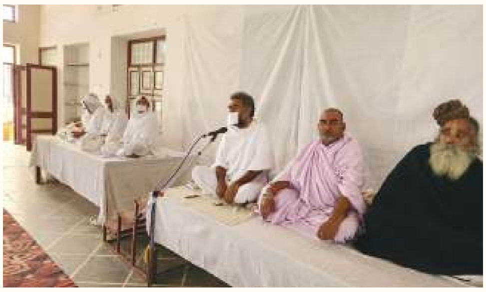

प्रवक्ता निलिप्का जैन

जीवन का सफल बनाना ही जीवन का ध्येय होना चाहिए: मुनि श्री आदित्य सागर महाराज

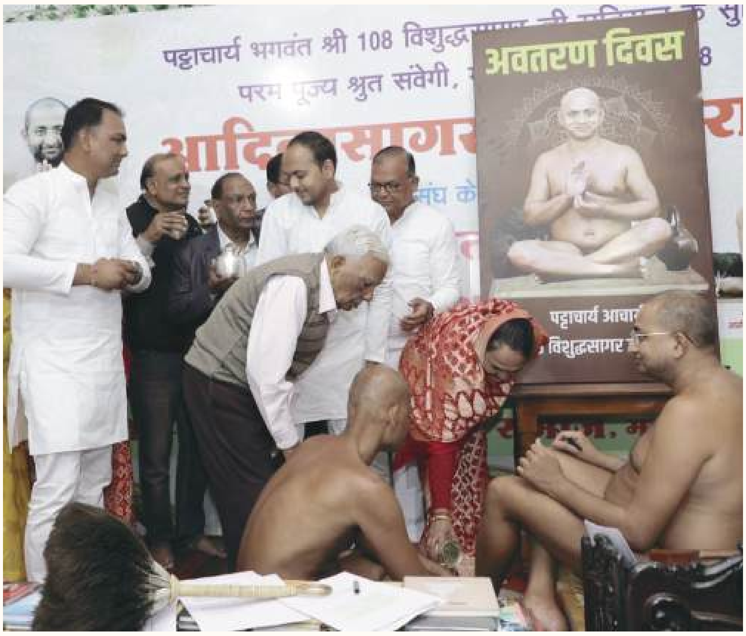

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

मदनगंज-किशनगढ़। श्रुतसंवेगी महाश्रमण मुनिश्री आदित्य सागर महाराज ने कहा कि मनुष्य पर्याय में आए हो तो जीवन का सफल बनाना ही जीवन का ध्येय होना चाहिए। दिशाहीन जीवन को जीने से आने वाली पीढ़ी को दुर्गति की ओर धकेला जा रहा है। यदि जीवन में आप कभी-कभार मंदिर या धार्मिक कार्य करोगे तो आपके बच्चे उसे महीने में दो बार और धीरे-धीरे बंद ही कर देंगे। ऐसे में बच्चों को संस्कारवान और बेहतर इंसान बनाना है तो माता-पिता को ही जिम्मेदारी उठानी पड़ेगी। सिटी रोड स्थित जैन भवन में प्रातः धर्म सभा में वर्तमान में लोग बीमार होने के कारणों पर चिंता जताते हुए कहा कि पहले के जमाने में लोग अत्यधिक खाना खाते थे लेकिन मेहनत बहुत अधिक करते थे। वर्तमान में लोग खाना अत्यधिक खा रहे है लेकिन मेहनत ही नहीं कर रहे है। इसके चलते शरीर धीरे-धीरे बीमारियों का घर बनता जा रहा है। वर्तमान के दौर में सीजन के अनुसार ही फलों और खानपान का उपयोग करना चाहिए वह अभक्ष्य हो जाता है। लेकिन दिखावे की होड़ में लोग शरीर को बीमार बनाने वाले खानपान का उपयोग कर रहा है। उन्होंने साधुओं के भोजन की शुद्धि बनाए रखने पर जोर दिया। वर्तमान दौर में माता-पिता और परिजन ही बच्चे को पोष्टिक आहार देने के बजाय बाजार का खाना उपलब्ध कराकर कमजोर बना रहे है। उन्होंने कहा कि जीवन में अन्न और स्त्री की तृप्ति कभी भी नहीं हो सकती है। यदि कोई ब्रह्मचर्य का प्रण कर लें तो उसे सीधे स्वर्ग की प्राप्ति होगी। यदि कोई परस्त्री के साथ भोग करता है तो वह जानवर के समान ही है। जीवन को सफल बनाना है तो तृप्ति जीवन जीना चाहिए। उन्होंने कहा कि जीवन को गलत रूट पर डालने और बार-बार गलत रूट पर होने की जानकारी होने के बाद भी नहीं लौटना जीवन को दुर्गति की ओर धकेलने के समान ही है। मुनि श्री ने कहा कि जीवन में 55 साल की उम्र होने के बाद व्यापार करना बंद करते हुए गुरु सेवा और धार्मिक कार्य में समय व्यतीत करना चाहिए। जीवन में यदि भजन का प्रवेश होगा तो दुर्गति और कमियों स्वतः ही दूर होने लगेगी। इससे पूर्व सभा में चित्रअनावरण, दीपप्रज्जवलन, पादप्रक्षालन, शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य श्रावक श्रेष्ठी प्रदीप कुमार पीयूष कुमार सौरभ कुमार गंगवाल परिवार असम वाले को मिला। आचार्य विशुद सागर जी महाराज का अवतरण दिवस मनाया। कार्यक्रम के दौरान आचार्य विशुद सागर जी महाराज का 54वा अवतरण दिवस हर्षउल्लास के साथ भक्ति पूर्वक मनाया एवं समाज जनों द्वारा भक्ति भाव से पूजन करते हुए संगीतकार की सुर मधुर लहरियो पर भक्ति नृत्य करते हुए अष्टद्रव्य समर्पित किए सभी पूवार्चार्यों को अर्घ समर्पित किए श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन पंचायत के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य, समाज बंधु, श्री आदिनाथ दिगंबर जैन पंचायत के पदाधिकारी एवं बाहर से पधारे अतिथियो ने अर्घ समर्पित किए। इस दौरान पंचायत अध्यक्ष विनोद पाटनी, चेतन प्रकाश पांडया, दिलीप कासलीवाल, राजेश पांडया, सुभाष बड़जात्या, गौरव पाटनी, पदम गंगवाल, मुकेश पाटनी, अनिल पाटनी, प्रकाश गंगवाल, प्रणेश बज, इंद्र पाटनी, मोहित बड़जात्या, धर्मचंद गोधा, घीसालाल अजमेरा, पवन गोधा, सुनील बाकलीवाल आदि उपस्थित रहे।

महावीर को मंदिर से निकालकर चौराहे पर लाओ – तरुण सागर जी के कथन का सत्य और आज के जैन समाज का आईना

तरुण सागर जी महाराज का एक वाक्य आज भी जैन समाज को असहज करता है –''महावीर को मंदिर से निकालकर चौराहे पर लाओ।''

कुछ लोग इस वाक्य को पकड़कर यह प्रचार करने लगते हैं कि वे मंदिर विरोधी थे, प्रतिमा विरोधी थे या परंपरा के विरोधी थे। यह न केवल बौद्धिक बेईमानी है बल्कि तरुण सागर जी की आत्मा और उनके संघर्ष का अपमान भी है। सच यह है कि यह वाक्य शब्द नहीं, चेतावनी था; आदेश नहीं, आईना था; विद्रोह नहीं, विवेक की पुकार था। तरुण सागर जी कभी यह नहीं कहते थे कि भगवान महावीर की प्रतिमा को मंदिर से हटाकर सड़क पर रख दिया जाए। उनका दर्द यह था कि महावीर मंदिर में तो हैं, लेकिन जीवन से बाहर कर दिए गए हैं। पूजा चौखट तक सीमित हो गई है और व्यवहार में महावीर का नामोनिशान नहीं बचा। मंदिर में शांति है, लेकिन बाहर व्यापार में बेईमानी है; मंदिर में अहिंसा है, लेकिन समाज में शोषण है; मंदिर में प्रवचन हैं, लेकिन जीवन में संयम नहीं है। तरुण सागर जी कहते थे – महावीर को पूजा से निकालकर व्यवहार में लाओ। चौराहा प्रतीक है उस जगह का जहाँ इंसान का असली चरित्र सामने आता है। जहाँ लेन-देन होता है, राजनीति होती है, सत्ता और स्वार्थ टकराते हैं, और जहाँ यह तय होता है कि हम महावीर के अनुयायी हैं या केवल उनके नाम के व्यापारी। आज जैन समाज की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि हम भगवान महावीर को पत्थर की प्रतिमा तक सीमित कर चुके हैं। आगम कहता है कि धर्म का उद्देश्य आत्मशुद्धि है, लेकिन हमने धर्म को आयोजन, प्रतिष्ठा और दिखावे में बदल दिया। अहिंसा का उपदेश देने वाला श्रावक कर चोरी करता है, श्रम का शोषण करता है और कमजोर पर अत्याचार करता है। सत्य की पूजा करने वाला समाज झूठी प्रतिष्ठा, झूठे प्रचार और झूठे महात्म्य में जी रहा है। तरुण सागर जी की पीड़ा यही थी कि महावीर को हमने मंच पर बैठा दिया

और स्वयं पाखंड के सिंहासन पर बैठ गए। वे कहते थे – अगर तुम्हारी दुकान पर बैठा हुआ आदमी महावीर को नहीं मानता, अगर तुम्हारा नेता महावीर को नहीं मानता, अगर तुम्हारा साधु आडंबर में डूबा है, तो मंदिर में रखी प्रतिमा किस काम की? आगम स्पष्ट कहता है कि केवल बाह्य पूजा से मोक्ष नहीं मिलता, जब तक आचरण शुद्ध न हो। दिगंबर और श्वेतांबर दोनों परंपराओं में महावीर का मार्ग संयम, अपरिग्रह और आत्मसंयम का है, न कि आयोजन, बोली और धन-प्रदर्शन का। तरुण सागर जी इसी आगमिक चेतना को जनभाषा में, तीखे शब्दों में समाज के सामने रख देते थे, ताकि नींद टूटे। जो लोग कहते हैं कि तरुण सागर जी मंदिर विरोधी थे, उन्हें यह बताना चाहिए कि क्या मंदिर में बैठकर अधर्म करने वाला धर्मात्मा हो जाता है? क्या घंटी बजाने से पाप धुल जाते हैं? क्या महावीर केवल संगमरमर की प्रतिमा हैं या चलती-फिरती चेतना? तरुण सागर जी का संदेश स्पष्ट था – मंदिर रहे, प्रतिमा रहे, पूजा रहे, लेकिन अगर जीवन में महावीर नहीं उतरे तो सब व्यर्थ है। महावीर को चौराहे पर लाने का अर्थ है – निर्णयों में महावीर, व्यवहार में महावीर, व्यापार में महावीर, राजनीति में महावीर और समाज में महावीर। आज अगर जैन समाज सच में महावीर को मानता है, तो उसे सबसे पहले अपने आडंबर, अपने पाखंड, अपने अहंकार और अपनी सुविधा-प्रधान धर्मव्यवस्था पर प्रश्न उठाने होंगे। वरना इतिहास यही लिखेगा कि जैन समाज ने महावीर को पूजा तो बहुत, पर जिया बिल्कुल नहीं। तरुण सागर जी मंदिर के विरोधी नहीं थे; वे मंदिर को ढाल बनाकर अधर्म करने वालों के विरोधी थे। वे भगवान के नहीं, भगवान के नाम पर व्यापार करने वालों के विरोधी थे। और यही कारण है कि उनका एक वाक्य आज भी हमें चुभता है, क्योंकि वह हमारी आत्मा के झूठ को बेनकाब करता है।

नितिन जैन
संयोजक – जैन तीर्थ श्री पार्श्व पद्मावती धाम, पलवल (हरियाणा)
जिलाध्यक्ष – अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन, पलवल
मोबाइल: 9215635871

नेमी सागर कॉलोनी में आचार्य सुंदर सागर द्वारा राम कहानी

जयपुर. शाबाश इंडिया

नेमी सागर कॉलोनी में पूज्य जैनाचार्य 108 श्री सुंदर सागर जी महाराज द्वारा राम कहानी की अगली श्रृंखला का वाचन किया गया।श्री नेमिनाथ दिगंबर जैन समाज समिति के अध्यक्ष जे के जैन कालाडेरा ने बताया कि दिगंबर जैन आचार्य श्री सुंदर सागर जी महाराज ससंघ का इन दिनों नेमी सागर कॉलोनी में प्रवास चल रहा है । आचार्य श्री द्वारा प्रतिदिन अपने प्रवचनों में राम कहानी का वाचन किया जा रहा है। सुंदर सागर महाराज के साथ 32 साधुगण का संघ है एवं अपनी तपस्या तथा साधना के साथ धर्म प्रभावना कर रहे हैं ।आचार्य श्री के प्रवास के दौरान दिगंबर जैन मंदिर नेमी सागर कॉलोनी में प्रतिदिन नित्य कलशाभिषेक शांति धारा प्रवचन एवं जिज्ञासा समाधान का आयोजन हो रहा है। आज प्रातः काल में मुनि संघ के द्वारा शांति धारा कराई जाकर विश्व शांति एवं सभी के कल्याण की मंगल भावना की गई। संध्याकाल में 48 दीपकों के साथ भक्तामर का संगीतमय विधान किया गया जिसके पुण्यार्जक लेखराज जैन एवं परिवार थे।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया

shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

आओ जानते हैं सप्त धातुओं के बारे में जो हमारा शरीर निर्मित करते हैं

आयुर्वेद के अनुसार शरीर में सप्त धातु होतें हैं, पूरा शरीर इनके द्वारा ही ऑपरेट होता है, आज हम आपको जो सप्त धातु पोषक चूर्ण के बारे में बताने जा रहें हैं ये उत्तम रसायन है, यह नस नाड़ियों एवम वात वाहिनियों को शक्ति प्रदान करता है. सात्विक भोजन औ सदाचरण के साथ इसके निरंतर सेवन से रोग प्रतिरोधक शक्ति बनी रहती है, और वृद्ध अवस्था के रोग नहीं सताते.

-अश्वगंधा (असगंध) 100 ग्राम,
-आंवला चूर्ण 100 ग्राम,
-हरड 100 ग्राम,

इन तीनो चीजों के चूर्ण को आपस में मिला लीजिये, अभी इसमें 400 ग्राम पीसी हुयी खांड मिश्री मिला लीजिये. और इसको किसी कांच की भरनी में भर कर रख लीजिये. प्रतिदिन एक चम्मच गर्म पानी के साथ या गर्म दूध के साथ ये चूर्ण पूरे साल फांक सकते हैं. जो व्यक्ति पूरी उम्र इसको खायेगा उसकी तो आयु कितनी होगी इसका अंदाजा भी लगा पाना मुश्किल है. अगर कोई व्यक्ति इसको 3 महीने से 1 साल तक खायेगा तो उसका शरीर भी कई सालों तक निरोगी रहेगा. इस योग को बनाने के लिए बस एक बात का ध्यान रखें के सभी वस्तुएं साफ सुथरी ले कर ही चूर्ण बनवाएं, कीड़े वाली अश्वगंधा ना लें. इसलिए ये सामग्री किसी विश्वसनीय दुकानदार से ही लें.

सप्त धातुओं का वर्णन

1. रस
2. रक्त
3. मांस
4. मेद
5. अस्थि
6. मज्जा
7. शुक्र

अगर कोई रोगी या बीमार व्यक्ति जिसको चाहे कब्ज हो या कोई भी रोग हो उसको इस चूर्ण को सेवन करने से पहले एक बार शरीर का पूर्ण रूप से शोधन कर लेना चाहिए, उसके लिए हमने एक बहतरीन चूर्ण बताया था ग्रुप मे शरीर शोधन के लिए (समस्त रोगों के लिए रामबाण चूर्ण) शरीर की सात धातुओं को पोषण देने वाला बहुत उत्तम चूर्ण है। पहले वाली धातु अपने से बाद वाली धातु को पोषण देती है और धातुओं को जितना भी पोषण मिलेगा शरीर उतना ही मजबूत होगा ।यह आयुर्वेद का एक बहुत गूढ़ सिद्धांत है। इस पोस्ट में हम इस बारे में ज्यादा गहराई में ना जाते हुये आपको एक ऐसे चूर्ण के बारे में बता रहे हैं जो इन सात धातुओं को पोषण देता है और इसको घर पर निर्मित करना भी बहुत आसान है।

-अश्वगंधा 100 ग्राम
-तुलसी बीज 50 ग्राम
-सौंठ 100 ग्राम
-हल्दी चूर्ण 50 ग्राम
-हरड़ 30 ग्राम
-बहेड़ा 60 ग्राम
-आंवला 90 ग्राम

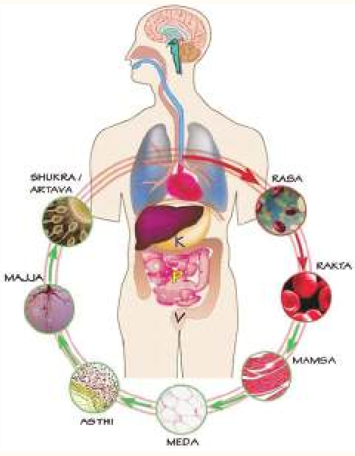

इन सभी चीजों को ऊपर लिखी गयी मात्रा में लेकर धूप में सुखाकर मिक्सी में पीस कर और सूती कपड़े में छानकर चूर्ण तैयार कर लें ।एयर टाईट डिब्बे में बंद रखने पर यह चूर्ण 6-8 महीने तक खराब नही होता है । ये सभी चीजें आपको अपने आस पास किसी जड़ी-बूटी वाले के पास बहुत आसानी से मिल जायेंगी ।

सेवन विधी :-

10 साल से कम उम्र के बच्चों को चौथाई से एक ग्राम, 16 साल तक के किशोर को 2 ग्राम और उससे बड़े व्यक्ति को 3-5 ग्राम तक सेवन करना है रात को सोते समय पानी, शहद, मलाई अथवा दूध के साथ।

इस चूर्ण के सेवन से मिलने वाले लाभ

शरीर में समस्त धातुओं को उचित पोषण देता है जिससे शरीर मजबूत और गठीला बनता है। पाचन सही रखता है जिससे खाया पिया शरीर को पूरी तरह से लगता है। बालों में चमक और मजबूती लाता है। त्वचा कांतिमय बनती है। शरीर में कैल्शियम की कमी नही होती जिससे हड्डियाँ मजबूत होती हैं। वात दोष के बढ़ने से हो जाने वाले रोगों से बचाव रहता है। शरीर में एलर्जी और अन्य इंफेक्शन जल्दी से नही होते हैं।

डा पीयूष त्रिवेदी आयुर्वेद विशेषज्ञ
शासन सचिवालय जयपुर ।

जीवन हमें खुशियों के इजहार के लिए मिला है: राष्ट्रसंत मुनि सुधासागरजी महाराज

असीम कालीन भक्तावर विधान का शुभारंभ

कैदियों के उद्धार के लिए तीन किलोमीटर पैदल चलकर पहुंचे गुरुदेव: जेलर दीक्षित

अशोक नगर. शाबाश इंडिया

जीवन हमें खुशियों के इजहार के लिए मिला है और इस सम्मान के हम सभी अधिकारी हैं। हनुमानजी हमें यह मार्ग दिखाते हैं कि जीवन में सम्मान कैसे प्राप्त किया जाता है। भगवान भक्तों के माध्यम से ही समाज में दिखाई देते हैं। केवल जयकार करना भक्ति नहीं है, बल्कि ऐसा जीवन जीना ही सच्ची भक्ति है कि लोग भक्त को देखकर भगवान के स्वरूप की कल्पना करें। उक्त विचार राष्ट्रसंत निर्यापक श्रमण मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ने जिला जेल में बंद बंदियों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि वे अपराधियों के बीच नहीं, बल्कि अपने भाइयों के बीच आए हैं। हम सबकी माता भारत माता है, फिर हमारे बीच यह भेद क्यों? उन्होंने कहा कि जेल देशद्रोहियों के लिए बनाई गई थी, उन लोगों के लिए जो मातृभूमि को अपना नहीं मानते और जिन्हें ह्लवंदे मातरम्ह कहने में भी संकोच होता है। आज आवश्यकता है कि हम अपने भीतर झांकें और स्वयं को सुधारें। इस अवसर पर जैन समाज के मंत्री विजय धुर्रा ने कहा कि जेल अधीक्षक दीक्षित ने कई बार चातुर्मास के दौरान पूज्य राष्ट्रसंत मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज के चरणों में निवेदन किया था कि जेल में बंद कैदियों को भी आपके मंगल प्रवचनों का लाभ मिलना चाहिए। पूज्य गुरुदेव ने कृपा कर आज बंदियों को आशीर्वाद प्रदान किया। जेल अधीक्षक दीक्षित ने कहा कि उन्हें पूर्व में परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के सान्निध्य में डिंडोरी जिला जेल में मंगल प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ था। आज राष्ट्रसंत मुनि सुधासागरजी महाराज कई किलोमीटर पैदल चलकर कैदियों के उद्धार के लिए पहुंचे हैं। ऐसे संतों को देखकर मन श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता है। मुनिश्री ने कहा कि अपने खून-पसीने की कमाई को नशे और शराब में नष्ट करने से जीवन में कभी खुशहाली नहीं आ सकती। जेल दंड देने के लिए नहीं, बल्कि सुधार का अवसर देने के लिए होती है। ईश्वर ने हमें इस धरती पर सम्मानपूर्वक जीवन जीने के लिए भेजा है। अहंकार, नशा और अपराध से दूर रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति महान है, जहां नारायण श्रीकृष्ण भी शांति के लिए दूत बनते हैं और श्रीराम अपने अधिकार होते हुए भी माता की आज्ञा का पालन करते हैं। आज अधिकांश अपराध अहंकार, परिस्थितियों और आदतों के कारण होते हैं। यदि व्यक्ति आत्मचिंतन कर ले, तो उसका जीवन सुधर सकता है। मुनिश्री ने बंदियों से आह्वान किया कि वे अपनी सजा को प्रायश्चित मानें, आदर्श कैदी बनें और ईमानदारी से अपने जीवन को सुधारें। यदि ऐसा संकल्प लिया जाए, तो ईश्वर की कृपा से सजा में भी राहत संभव है। उन्होंने कहा कि मैं भगवान का संदेश लेकर आया हूं—थोड़ा सा पश्चाताप ही जीवन को नई दिशा दे सकता है। इस अवसर पर अध्यक्ष राकेश कांसल, उपाध्यक्ष अजित वरोदिया, महामंत्री राकेश अमरोद, कोषाध्यक्ष सुनील अखाई, मंत्री शैलेन्द्र श्रागर, मंत्री विजय धुर्रा, मंत्री संजीव भारिल्ला, मीडिया प्रभारी अरविंद कचनार, ऑडिटर संजय के.टी., संयोजक मनोज रन्नौद, उमेश सिंघई, मनीष सिंघई, श्रेयांस जैन सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे।

राष्ट्र गौरव अटल जी के जन्मदिन, सुशासन दिवस पर

परमाणुशक्ति सम्पन्न

इंजी. अरुण कुमार जैन

अपनी भाषा, अपनी धरती, अपना स्वाभिमान,
माँ का मान बढ़ाने वाले, राजर्षि तुम्हें प्रणाम.
नगर ग्वालियर जन्म लिया
काव्य,राष्ट्र पहिचान,
कानपुर को गौरव देकर, पाया सम्यक ज्ञान.
****
राष्ट्र प्रेम था रोम रोम में,
हिंदी, हिन्दू पहिचान,
भारत भू के जन गण के हित,अर्पित थे प्रण प्राण.
कारावास यंत्रणा भोगी,
किंचित न घबराये,
देश प्रेम हित कार्य सभी थे
पल, क्षण बढ़ते आये.
***
संयुक्त राष्ट्र में गूंजी हिंदी,
इक नव गौरव पाया,
अखिल विश्व ने मंत्रमुग्ध हो
हिंदी का यश गाया.
किया राष्ट्र नेतृत्व श्रेष्ठ,
नये शिखर तक लाये,
परमाणु शक्ति सम्पन्न करा,
इतिहास नया रच पाये.
**
नहीं डरे जग आकाओं से, स्वाभिमान सिखलाया,
स्वर्णिम चतुर्भुज बनवाकर
सबको सतत बढ़ाया.
ओजस्वी वाणी सुनकर के,
प्रेरक जन- जन होते,
अंतर्मन को कविता छूती,
अहलादित सब होते.
***
दसवें राष्ट्र प्रधान देश के, 'भारत रत्न 'का गौरव,
अखिल विश्व केअनुरागी थे
पावन सुरभि सौरभ.

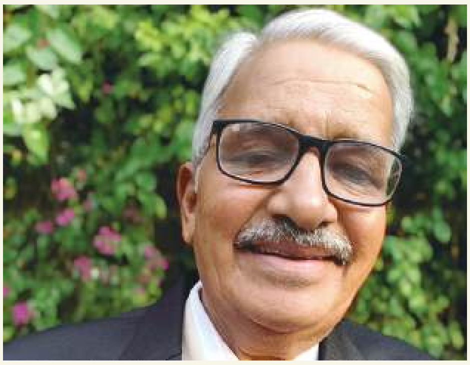

जन्मदिवस पावन अवसर पर, वंदन, नमन स्वीकारें.
सुशासन के दिव्य प्रणेता,
हम सब गुण अपनाएं.
कृतज्ञ राष्ट्र करता है वंदन,
सतत प्रेरणा पाएं,
हर युग अटल रहें वसुधा पर,नित प्रति पथ दर्शाएं.

**संपर्क// अमृता हॉस्पिटल,
सेक्टर 88,फरीदाबाद,
हरियाणा, मो.
7999469175**

रोटरी क्लब जयपुर नार्थ द्वारा ऐतिहासिक रक्तदान शिविर, सेवा, समर्पण और मानवता का अनुपम उदाहरण

जयपुर. शाबाश इंडिया

रोटरी क्लब जयपुर नार्थ के तत्वावधान में आयोजित रक्तदान शिविर अत्यंत सफल, प्रेरणादायक एवं ऐतिहासिक रूप से संपन्न हुआ। इस महाअभियान में समाज के प्रति समर्पण और मानवता की भावना का अद्भुत संगम देखने को मिला। इस शिविर में कुल 95 यूनिट रक्त संग्रह हुआ, जो अपने आप में एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। यह केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि 95 परिवारों के लिए जीवन की आशा और नई सांस है। इस अवसर पर अध्यक्ष अनिल जैन ने जानकारी देते हुए कहा कि ह्यरक्तदान महादान है। यह न केवल

किसी जरूरतमंद को जीवन देता है, बल्कि समाज में सेवा और संवेदनशीलता की मिसाल भी प्रस्तुत करता है। क्लब के सभी सदस्य ने जिस उत्साह, अनुशासन और समर्पण के साथ इस शिविर को सफल बनाया, वह वास्तव में प्रशंसनीय है। उन्होंने सभी रक्तदाताओं, सदस्य मेडिकल टीम एवं सहयोगकर्ताओं का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आप सभी की सक्रिय भागीदारी से यह रक्तदान शिविर एक यादगार और ऐतिहासिक सेवा अभियान बन

सका। शिविर के दौरान सुव्यवस्थित व्यवस्थाएँ, अनुशासित संचालन और सकारात्मक वातावरण ने कार्यक्रम की गरिमा को और भी ऊँचाई प्रदान की। भविष्य में भी इसी प्रकार सेवा, समर्पण और मानवता के कार्यों के माध्यम से समाज के लिए निरंतर कार्य करता रहेगा।